सभोपदेशक 4:13 (ERV Hindi)
“एक गरीब परन्तु बुद्धिमान युवक किसी वृद्ध और मूर्ख राजा से श्रेष्ठ है, जो चेतावनी सुनना नहीं जानता।”

पद्य 14:
“क्योंकि वह कैद से निकलकर राजा बना, भले ही वह अपने राज्य में गरीब जन्मा था।”

पद्य 15:
“मैंने देखा कि सभी जीवित लोग जो सूर्य के नीचे चलते हैं, युवा व्यक्ति द्वारा बांध दिए गए थे, जो उसकी जगह खड़ा था।”

पद्य 16:
“जो उसके बाद आएंगे, वे उसकी प्रशंसा नहीं करेंगे। निश्चय
ही यह भी व्यर्थता और हवा की खोज है।”

धार्मिक व्याख्या

पद्य 13 मानव उपाधियों, उम्र या स्थिति से अधिक बुद्धि के

सर्वोच्च मूल्य पर जोर देता है। बाइबिल में बुद्धि केवल ज्ञान नहीं है, बल्कि सही तरीके से भगवान और दूसरों के सामने जीने की क्षमता है। यह पद एक गरीब परन्तु बुद्धिमान युवक की तुलना एक पुराने और मूर्ख राजा से करता है, जो सुधार स्वीकार नहीं करता। परामर्श को अस्वीकार करना एक गंभीर आध्यात्मिक दोष है (सन्दर्भ: नीतिवचन 1:7; 9:10), क्योंकि बुद्धि का आरंभ यहोवा का भय और एक विनम्र हृदय है जो सीखने के लिए तैयार हो (नीतिवचन 13:1)।

ऐसे मूर्ख शासकों के बाइबिल उदाहरण जिन्होंने ईश्वरीय चेतावनियों को अनदेखा किया, उनमें रहोबोआम (1 राजा 12),Nebukadnezzar (दानिय्येल 4, आरंभिक काल), बेलशज़र (दानिय्येल 5), आहाब (1 राजा 16-22), और हेरोद (प्रेरितों के काम
12) शामिल हैं। उनकी जिद ने उनके राष्ट्रों पर न्याय और आपदा ला दी, और यह दिखाया कि नेताओं का ईश्वर के प्रति नम्र और आज्ञाकारी रहना कितना महत्वपूर्ण है।

पद्य 14 सांसारिक सफलता और ईश्वरीय सार्वभौमिकता के विरोधाभास को दर्शाता है। “युवा जो कैद से निकलकर राजा बना” संभवतः जोसेफ (उत्पत्ति 41) और डेविड (1 शमूएल 16) जैसे पात्रों की ओर इशारा करता है। जोसेफ को अन्यायपूर्वक कैद किया गया था, लेकिन फिर वह फिरौन के दाहिने हाथ पर बैठा; डेविड एक चरवाहा लड़का था, लेकिन राजा बना। यह दर्शाता है कि ईश्वर की व्यवस्था मानव स्थिति से

सीमित नहीं है; वह नीचों को उठाता है और घमंडियों को नीचा करता है (भजन 75:6-7; लूका 1:52)।

यह पद यह चेतावनी देता है कि जन्म या पद से सफलता सुनिश्चित नहीं होती। सच्चा उत्थान केवल ईश्वर के हाथ से आता है, न कि केवल मानव प्रयास से।

पद्य 15 मानव विश्वास की अस्थायी प्रकृति को दर्शाता है। एक शासक के उठने और निष्ठा प्राप्त करने के बाद, दूसरा जल्दी ही आता है, और लोग अपनी सहायता बदल देते हैं। यह सांसारिक सत्ता की अस्थिर और अस्थायी प्रकृति को दर्शाता है (सन्दर्भ: भजन 146:3–4)। सबसे शक्तिशाली नेता भी हमेशा लोगों की प्रशंसा नहीं रख सकते; सब परिवर्तन और अंततः प्रतिस्थापन के अधीन हैं।

पद्य 16 यह सच्चाई बताता है कि कोई भी मानव शासन स्थायी खुशी या संतोष नहीं ला सकता। लेखक इसे “व्यर्थता” (हिब्रू हेवेल) कहते हैं, जो अर्थहीनता या क्षणभंगुरता का प्रतीक है (सभोपदेशक 1:2, 12)। “हवा की खोज” का अर्थ है मानव प्रयास से स्थायी महत्व खोजने का असफल प्रयास।

सारांश और आध्यात्मिक चिंतन

यह पंक्तियाँ याद दिलाती हैं कि सांसारिक सम्मान, स्थिति और सफलता अस्थायी और अक्सर अनिश्चित हैं। मानव प्रशंसा अस्थिर है और समय के साथ समाप्त हो जाती है। सच्ची बुद्धि और स्थायी सुरक्षा का स्रोत केवल ईश्वर है (नीतिवचन 2:6)।

नेताओं के उत्थान और पतन का चक्र यह दिखाता है कि नश्वर शासकों में आशा रखना व्यर्थ है। इसके बजाय, ईसाईयों को अपनी आशा यीशु मसीह में रखनी चाहिए — वह शाश्वत राजा जो केवल बुद्धिमान, न्यायी और सदा सत्यनिष्ठ है (प्रकाशित वाक्य 19:16)। सांसारिक राजाओं के विपरीत, यीशु कभी कृपा नहीं खोते, कभी थकते नहीं और जो उन पर विश्वास करते हैं उन्हें अनंत जीवन देते हैं (यूहन्ना 10:27-30; इब्रानी 13:8)।

यदि आपने अभी तक यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता नहीं माना है, तो यह आपका निमंत्रण है कि आप अपना हृदय खोलें, उनकी बुद्धि ग्रहण करें और अनंत जीवन प्राप्त करें (यूहन्ना 1:12)।

प्रभु आपको समृद्धि और सच्ची बुद्धि की खोज में आशीर्वाद दें!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp